ग

# करवा चौथ के लोक चित्र : सुहाग और स्त्री सौंदर्य की अभिव्यक्ति

• डॉ0 शताक्षी चौधरी

भारतीय लोक कला भारतीय समाज की सामूहिक चेतना, जीवन–पद्धति और सांस्कृतिक परम्पराओं का जीवन्त आलेख है। यह भारत की सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक जीवन का दर्पण है। यह कला ग्रामीण जीवन, धार्मिक विश्वासों, लोक परम्पराओं और उत्सवों से गहराई से जुड़ी हुई है। लोक कलाकार अपने दैनिक जीवन, रीति–रिवाजों और मान्यताओं को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करते है और इन मान्यताओं में एक पर्व है–करवा चौथ, जो कार्तिक माह की अमावस्या को मनाया जाता है। कार्तिक माह हिन्दु चंद्र पंचांग के शुभ माहों में से एक है। करवा चौथ को करक चतुर्थी भी कहा जाता है। करक चतुर्थी मनाने की परम्परा प्राचीन काल से ही हिन्दु धर्म का अभिन्न अंग रही है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में, जहाँ यह परम्परा मनाई जाती है, वहाँ की अपनी–अपनी लोक परम्पराएं और कथाएं हैं, जो इस त्योहार से जुड़ी सांस्कृतिक विरासत का एक हिस्सा है। करवा चौथ व्रत कार्तिक माह से जुड़ी सर्वव्यापी पवित्रता को समाहित करते हुए विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों का अदभुत संगम प्रस्तुत करता है, जैसा कि हमारे पुराणों में भी वर्णित है। यद्यपि इसे आमतौर पर पति–पत्नी के वैवाहिक बंधन के उत्सव के रूप में मनाया जाता है तथापि यह परम्परा परिवार के कल्याण की कामना तक फैली हुई है, जो इस अनुष्ठान में खूबसूरती से प्रदर्शित होती है। करवा चौथ उत्तर भारत का एक प्रमुख पर्व है। यह मुख्यतः पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और मध्य प्रदेश में मनाया जाता है। इसे आन्ध्र प्रदेश

मधुबनी चित्रकला में करवा चौथ का अंकन

में अटला तड्डे के रूप में मनाया जाता है। इस दिन विवाहित स्त्रियाँ अपने पति की दीर्घायु और सुख–समृद्धि के लिये पूरे दिन (सूर्योदय से चन्द्रोदय तक) निर्जला व्रत रखती हैं तथा चन्द्रदोय के उपरान्त ही चतुर्थी के चन्द्रमा की पूजा और अर्ध्य के बाद ही महिलाएँ जल का सेवन करती हैं। ''करवा'' मिट्टी का पात्र होता है, जो समृद्धि और मंगल का प्रतीक माना जाता है। ''चौथ'' का अर्थ कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि से है। इस पर्व में स्त्रियाँ सोलह श्रृंगार कर चन्द्रमा की पूजा–अर्चना करती हैं और छलनी से चन्द्र दर्शन के बाद व्रत पूर्ण करती है। करवा चौथ का नाम करवा चौथ मिट्टी के उस बर्तन से पड़ा, जिसमें एक टोंटी होती है तथा जिसका उपयोग इस दिन की रस्मों में किया जाता है। टोंटी वह छेद होता है जिसमें सरकड़ी की लम्बी डंडियाँ डाली जाती है। इन डंडियों को शाम की पूजा के समय करवे से निकालकर चंद्र देवता को अर्पित किया जाता है । इस अनुष्ठान से जुड़ी पारम्परिक लोक कला में शुभ हिन्दु प्रतीकों यथा–करवा, चन्द्रमा सूर्य, तारे, मोर, पंखा, सीढ़ी, चटाई, खाट, वृक्ष, सुहाग की वस्तुएँ– चूड़ी, बिन्दी, मेंहदी, महावर के साथ–साथ इस त्योहार से जुड़ी मुख्य लोक कथाओं को भी चित्रित किया जाता है । करवा में चित्रित प्रतीकों को सामान्यतः दो श्रेणियों में रखा जाता है एक अलौकिक और दूसरे इह लौकिक (भौतिक जगत के प्रतीक)। अलौकिक आकृतियों में सूर्य व चन्द्रमा प्रमुखता से बनाये जाते हैं। इनके अलावा कृष्ण, शंकर व गणेश को भी परम्परा अनुरूप बनाया जाता है। करवा–चौथ से सम्बन्धित लोक चित्र भारतीय लोक संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग है। इन चित्रों में धार्मिक प्रतीकों, पारम्परिक रीति–रिवाजों और स्त्री भावनाओं का सुंदर समन्वय दिखायी देता है।

सर

## उद्भव

करवा चौथ का उद्भव भारतीय परम्परा और लोक संस्कृति से जुड़ा हुआ माना जाता है। ऐतिहासिक रूप से करवा–चौथ का सम्बन्ध कृषि और सामाजिक जीवन से भी माना जाता है। प्राचीन समय में जब पुरूष युद्ध या व्यापार के लिये दूर चले जाते थे, तब महिलाएँ उनकी सुरक्षा और कुशलता की कामना हेतु यह व्रत करती थीं। पौराणिक कथाओं में भी करवा चौथ की उत्पत्ति से सम्बन्धित कई कथाएँ मिलती है। वीरवती की कथा सबसे प्रसिद्ध है जिसमें एक रानी अपने पति की लम्बी आयु के लिये व्रत रखती है। इसके अतिरिक्त महाभारत में द्रौपदी द्वारा अर्जुन की सुरक्षा हेतु व्रत रखने का उल्लेख भी करवा चौथ से जोड़ा जाता है। कुछ किवदन्तियों के अनुसार इस व्रत की शुरूआत राजा–रजवाड़ों के प्रदेश राजस्थान से मानी जाती है। करवा चौथ की शुरूआत राजस्थान में कब हुई, यह जानना कठिन है। निश्चित ही मध्य काल में लोक त्योहार के रूप में हुई है । राजस्थान में चौथ माता का मंदिर भी है । इसे राजा भीम सिंह चौहान ने बनवाया था। शनैः शनैः दाम्पत्य में प्रेम और प्रगाढ़ता लाने वाला यह व्रत मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा में मनाया जाने लगा और आज यह पर्व भारतीय सांस्कृतिक विरासत और वैवाहिक प्रेम का प्रतीक माना जाता है। नारद पुराण में भी व्रत का वर्णन इस प्रकार किया गया है – करक व्रत नामक पवित्र अनुष्ठान कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को किया जाता है। केवल स्त्रियां ही इस व्रत को कर सकती हैं। स्कन्द पुरण में देवी पार्वती ने अपने पुत्र कार्तिकेय को सम्बोधित करते हुए कार्तिक माह के महत्व पर प्रकाश डाला है कि वे स्त्रियों द्वारा आराधना किये जाने पर उन्हें सौभाग्य, सुखी पति और संतान प्रदान करती है। निर्णय सिंधु, धर्म सिंधु और व्रतराज में भी करक चतुर्थी का उल्लेख मिलता है।

## करवा चौथ एवं अन्य लोक कलाओं का समन्वय

करवा चौथ भारतीय लोक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पर्व है। यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक ही सीमित नहीं बल्कि यह कई समृद्ध लोक कलाओं के साथ जुड़ा हुआ है।

1. करवा चौथ पर्व पर मिट्टी के करवे और दिये की सजावट का बहुत महत्व होता है। महिलाएँ इन करवों और दियों को गेरू, रोली, चावल के आटे के लेप और चमकीले रंगों से बेहद खूबसूरत तरीकों से पेंट करती है। इस लोक कला में पारम्परिक ज्यामितीय और पुष्प आकृतियाँ बनायी जाती हैं। यह पात्र सज्जा कला को इंगित करता है। करवा चौथ में चन्द्रमा को देखने वाली छलनी और पूजा की थाली को लोक कला के माध्यम से सजाया जाता है। इसमें कुमकुम, हल्दी, मोतियों, गोटा–पट्टी और शीशों (Miror Work) का इस्तेमाल करके पारम्परिक माण्डना या रंगोली के डिजाइन उकेरे जाते हैं।
2. हाथों एवं पैरो में मेंहदी लगाना इस पर्व का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो मेंहदी लोक कला से जुड़ा हुआ है। विवाहित महिलाएँ सोलह श्रृंगार के तहत अपनी हथेलियों पर मोर, कलश, डोली, शहनाई और पति–पत्नी के मिलन जैसे जटिल लोक डिजाइन बनवाती हैं।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में व्रत से पहले घर की दीवारों पर गोबर और गेरू से 'करवा', 'शिव–पार्वती' या 'गौरी माता' की आकृति बनायी जाती है। कई जगहों पर गौरी माता की मूर्ति भी गोबर से बनायी जाती है, जिसकी पूजा व्रत के दौरान की जाती है। यह लोक भित्ति चित्र के स्वरूप के महत्व को प्रदर्शित करता है।
4. करवा चौथ की पूजा के दौरान महिलाएँ गोल घेरे में बैठकर पारम्परिक लोक गीत गाती हैं। इसके साथ ही

वे ''करवा माता'' या सात भाईयों और उनकी इकलौती बहन की लोक कथाएँ सुनती हैं। गीतों और कथाओं की यह मौखिक परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कृति को आगे बढ़ाती है।

5. इस दिन पहने जाने वाले पारम्परिक परिधानों (लहंगा या साड़ी) में भारत की पारम्परिक लोक कढ़ाई जैसे–फुलकारी (पंजाब), गोटा–पट्टी और बांधनी (राजस्थान) का काम देखने को मिलता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस पर्व से विभिन्न समृद्ध लोक कलाएँ, परम्पराएं एवं संस्कृतियाँ जुड़ी हैं। राजस्थान की माण्डना, उत्तर प्रदेश की अल्पना और चौकपूरना तथा पंजाब की फुलकारी और लोक सजावट की शैली का प्रभाव इन चित्रों में दिखायी देता है। इसके अतिरिक्त करवा चौथ में लोक हस्तशिल्प, मेंहदी, रंगोली और लोक वस्त्रों की झलक भी दिखायी देती है। करवा चौथ में विभिन्न लोक कलाओं का समन्वय भारतीय सांस्कृतिक परम्परा, स्त्री संवेदना और सामुदायिक जीवन की सुन्दर अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है । यह समन्वय भारतीय लोक संस्कृति की जीवन्तता और विविधता को सशक्त रूप से दर्शाता है।

इसके साथ ही विभिन्न क्षेत्रों की लोक कलाओं में भी करवा चौथ के रीति–रिवाज, स्त्री सौन्दर्य, श्रृंगार तथा पारिवारिक भावनाओं का सुन्दर चित्रण देखने को मिलता है। मधुबनी चित्रकला में करवा चौथ के अवसर पर जो चित्र बनाये जाते हैं उनमें करवा सुहागिन स्त्रियाँ, पूजा की थाली एवं पारम्परिक अलंकरणों का अत्यन्त सजावटी रूप दिखायी देता है। इन चित्रों में लाल पीला और हरा रंग प्रमुख रूप से उपयोग किये जाते हैं, जो मंगल और समृद्धि के प्रतीक हैं। चित्रों में स्त्रियाँ पूजा करते हुए दर्शायी जाती हैं। राजस्थान की फड़ और माण्डना कला में भी करवाचौथ से जुड़े लोक प्रतीकों और अलंकरणों का प्रयोग होता है। पंजाब की लोक कला एवं लोक गीतों में भी करवा चौथ का विशेष स्थान है, जहाँ स्त्रियाँ गीतों और नृत्यों के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त करती हैं। वर्ली कला, जो कि महाराष्ट्र की जनजातीय कला है, में भी सरल रेखाओं और ज्यामितीय आकृतियों के सामूहिक जीवन को चित्रित किया जाता है। करवा चौथ से जुड़े चित्रों में महिलाएँ नृत्य करती हुई चन्द्रमा की ओर देखती हुई तथा सामूहिक पूजा करती हुई दिखायी देती हैं। गोंड कला में करवाचौथ से सम्बन्धित चित्रों में वृक्ष, चन्द्रमा, पक्षी, स्त्री आकृतियों के माध्यम से वैवाहिक प्रेम और जीवन की निरन्तरता को दर्शाया जाता है। इसमें बिन्दुओं और रेखाओं की सजावटी शैली प्रमुख होती है।

## करवा चौथ पर चित्रित चित्रों का विवरण

करवा चौथ के अवसर पर बनाए जाने वाले चित्र भारतीय लोक संस्कृति, स्त्री आस्था और पारिवारिक परम्पराओं का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। ये चित्र मुख्यतः घरों की दीवारों, आंगनों, पूजा स्थलों, करवा पात्रों तथा कागज या कपड़े पर बनाये जाते हैं। इन चित्रों में धार्मिक प्रतीकों, सुहाग चिन्हों तथा लोक जीवन के दृश्य प्रमुख रूप से दिखायी देते हैं। करवा चौथ से जुड़े लोक चित्र मुख्य रूप से उत्तर भारत की पारम्परिक लोक कला का हिस्सा है। इस दिन घर की दीवारों या कोनों को लीप कर गेरू से गौरी (माता पार्वती) का चित्र और करवा बनाये जाते हैं, जो अखण्ड सौभाग्य का प्रतीक है। इसके साथ ही गोबर से भी दीवार पर कई आकृतियाँ यथा– चन्द्रमा, करवा (मिट्टी का कलश), छलनी, दिया, शिव–पार्वती, गणेश, सुहागिन स्त्री, मेंहदी, चूड़ियाँ, स्वास्तिक, कलश, पूजा की थाली इत्यादि का प्रतीकात्मक चित्रण किया जाता है।

कहीं–कहीं पर लोक कला में गेहूँ या चावल के आटे के घोल से करवा चौथ की कथा के अनुसार सात भाई–भाभी और उनकी इकलौती बहन, उसका वर, तुलसी का गमला, दूध वाली गाय, करूआ बेचने वाली कुम्हारिन, महावर लगाने वाली नाइन, चूड़ी पहनाने वाली मनहारिन आदि भी बनाये जाते हैं। गौरी के लिये सुहाग की वस्तुएँ जैसे– चूड़ी, बिंदी, बिछुआ, मेंहदी, महावर इत्यादि भी बनाये जाते हैं। इस प्रकार करवा चौथ की सम्पूर्ण कहानी को फलक में चित्रित किया जाता है।

## मधुबनी चित्रकला में करवा चौथ का अंकन

कुछ क्षेत्रों में भेंट के रूप में दी जाने वाली करवा–पूजन सामग्री को ले जाते हुए भाई का चित्रण भी किया जाता है क्योंकि करवा देना भाई का दायित्व है।

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी से प्रदीप कुमार द्वारा चित्रित करवा चौथ लोक कला से सम्बन्धित भित्ति चित्र करवा चित्रण में गौरी चित्रण प्रधान है वहीं केन्द्र है करवा रखने का। गौरी चिर सुहागिन है। उसी से सुहाग लेकर चिर सुहाग की कामना की जाती है। यह एक अनूठी कला है, जो सदियों से परम्परागत रूप में चली आ रही है। करवाचौथ से जुड़ी हुई परम्पराओं में एक अनूठी परम्परा है–करवा कला। करवा कला यानि सम्पूर्ण करवा की कहानी कहते भित्ति चित्र। इन भित्ति चित्रों की निर्माण कला को करवा धरना एवं चित्रों को वर कहते हैं। करवा धरने की कला में सबसे अधिक पारंगत उत्तर प्रदेश के लखनऊ,

बाराबंकी, सीतापुर, लखीमपुर, उन्नाव, कानपुर और इटावा तक फैले क्षेत्र की नारियाँ होती हैं, वे करवा पूजन के निमित्त इन भित्ति चित्रों का निर्माण करती हैं । करवा रेखांकन चित्रण की कला है । यह एक ओर सुहाग की अटलता के अनुष्ठान से जुड़ी है तो दूसरी ओर भित्ति चित्रों की पारंपरिक लोक कला से। दीवारों के अलावा कहीं–कहीं सुविधानुसार इसे जमीन पर भी धर लिया जाता है। जमीन का करवा सादा होता है। वह चावल के आटे और हल्दी के घोल से अंगुली के सहारे जमीन पर बनाया जाता है। दीवारों में बनने वाले करवे अलग–अलग जगहों पर अपनी परम्पराओं के अनुरूप धरे जाते हैं । कुछ क्षेत्रों में यह रंगीन भी बनते हैं और कुछ क्षेत्रों में यह गेरू व चावल के आटे से बनाये जाते हैं। दोनों ही परिस्थितियों में सर्वप्रथम दीवार पर एक आयताकार फलक का निर्माण करना होता है रंगीन करवे के लिए दीवार पर चावल के आटे का घोल पोत दिया जाता है। सूखने पर उसे झाड़ दिया जाता है। सूखने पर इस फलक पर बनने वाले प्रतीकों का काले रंगे से खाका बनाया जाता है तत्पश्चात रंग भरे जाते हैं रंग मुख्यतः हरा, लाल, गुलाबी, नीला, पीला होते हैं। करवा चित्रण में किनारा जरूर बनाया जाता है। किनारा बेलदार या लहरदार या फूलदार या त्रिभुज, आयताकार, वर्ग व वृत्त जैसी ज्यामितीय आकृतियों के मिश्रण से बनाया जाता है। गेरू और चावल से बनने वाले करवों में फलक गेरू से बनाया जाता है फिर उस पर चावल के घोल से सम्पूर्ण चित्रकारी की जाती है। यह सम्पूर्ण विधि पारंपरिक पुट लिए होती है। चित्र निर्माण में प्रयुक्त सामग्री में गेरू, चावल का घोल, हल्दी, कुमकुम, रोली, फूल, प्राकृतिक रंग, मिट्टी, रंगोली पाउडर, ब्रश, कपड़ा, कागज आदि शामिल है। आजकल कई महिलाएँ सजावट के लिये शीशे, चमकी, मोती, और रंगीन कागज का भी प्रयोग करती हैं। आधुनिक समय में पोस्टर रंग, एक्रेलिक रंग, स्केच पेन आदि का उपयोग भी होने लगा है।

इन चित्रों का उद्देश्य केवल सजावट करना नहीं है। बल्कि वे सौभाग्य, समृद्धि, प्रेम और धार्मिक विश्वास की अभिव्यक्ति भी होती है। करवा चौथ की भारतीय लोक परम्पराओं और स्त्री सृजनात्मकता का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार विश्वास, परम्परा, सुहाग की अटलता की कामना की यह अभिव्यक्ति करवा चौथ के रूप में प्रसिद्ध है। करवा धरने की यह अनोखी पारम्परिक कला न केवल सदियों से चली आ रही है बल्कि समय के साथ निखरी भी है। यह ग्रामीण और पारम्परिक भारत की वह धरोहर है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ रही है।

• **डॉ0 शताक्षी चौधरी**
असि0 प्रो0 (चित्रकला विभाग)
रानी भाग्यवती देवी महिला महाविद्यालय, बिजनौर